नाम : डॉ॰ सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - स्नातक प्रथम वर्ष
पत्र - I
व्याख्यान क्र॰सं - 2
दिनांक :- 22.05.2020

शीर्षक : हिंदी कहानी का उद्भव और विकास

हिंदी कहानी का उद्भव और विकास :

(iii) प्रसाद और प्रेमचंद युग :- हिंदी कहानी को प्रेमचंद के आने
से एक ठेठ भारतीय ठसक मिली । इस कहानी में भारतीय जीवन,
उसका यथार्थ, आदर्श और विकास - सभी को एक साथ करके
कहानी का विशुद्ध देशी रूप चित्रित कर दिया । प्रेमचंद की कहानियाँ
स्वाधीनता का आदर्श कूट-कूट कर भरा हुआ है । 'मानसरोवर'
नामक संग्रह में प्रेमचंद की लगभग तीन सौ कहानियाँ संगृहीत
हैं । इनकी अधिकांश कहानियों में तत्कालीन ग्रामीण जन-जीवन
का सजीव चित्र उपस्थित रहता है । प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम
अधिवेशन में (1936 ई॰) उन्होंने कहा था, 'वह (साहित्यकार) देशभ-
-क्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि
उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है ।" इनकी
कहानियों के संग्रह 'मानसरोवर' के आठ खण्ड संग्रहों में प्रकाशित
हुई हैं । इनकी उल्लेखनीय कहानियों में इनकी प्रथम कहानी पंचपरमे-
-श्वर, आत्माराम, बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी, शतरंज के खिलाड़ी,
ईदगाह, रानीसारंधा, वज्रपात, बूढ़ी काकी, पूस की रात, सुजान
भगत, कफन आदि हैं । उनकी कहानियों में बूढ़े (बूढ़ी काकी), बच्चों
(ईदगाह और रामलीला) और पशु-पक्षियों का (दो बैलों की कथा, पूस
की रात) भी बड़ा आत्मीय स्थान है । कफ़न, कहानी तो हर दौर,
हर समय में प्रासंगिक है । यह कहानी अपने अंत तक यथार्थ को पकड़े

Scanned with CamScanner

रहती है। प्रेमचंद की कहानियों की समीक्षा करते हुए रामस्वरूप चतुर्वेदी जी ने कहा है: "मानव चरित्र के ऐसे आत्मीय अंकन विरल हैं, जहाँ कि रचना-संसार में हर पात्र यह अनुभव करे कि लेखक की सहानुभूति उसी के साथ है, वह चाहे 'मंत्र' का आदर्शप्रिय बूढ़ा भगत हो चाहे 'कफ़न' के तीखे यथार्थ में सने विद्रूप घीसू और माधव हो। कथाकार की इस गहरी सहानुभूति के कारण ही यह चरित्र अपने-अपने संदर्भ में पूरे विश्वसनीय बन जाते हैं और एक गहरे मूल्य-बोध की सृष्टि करते हैं। रचना के इस स्तर पर कला और समाज-चेतना के कृत्रिम विभाजन आप से आप विलीन हो जाते हैं।"

प्रेमचंद के समकालीन छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने भी कहानियाँ लिखीं। ये कहानियाँ चरित्रप्रधान, सामाजिक और रोमानी होती हैं। पुरस्कार, आकाशदीप, ग्राम, गुंडा आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। इनकी कहानियों में मन की अनेक पर्तों में समाहित मानवीय भावनाओं का चित्रण मिलता है। अन्य समकालीन कथाकारों में विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' और सुदर्शन सामाजिक एवं पारिवारिक विषयों पर कहानियाँ लिखते थे। 'ताई' और 'हार की जीत' क्रमशः इनकी अत्यंत प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। फिर अनेक प्रगतिशील कथाकारों ने भी कई प्रसिद्ध कहानियाँ लिखीं, जिनमें यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', आदि। 'मक्रील' यशपाल की पहली कहानी है। यशपाल प्रेमचंदोत्तर युग के एक प्रमुख हिंदी कहानीकार हैं। राहुल सांकृत्यायन की 'सतमी के बच्चे' और 'वोल्गा से गंगा' में विभिन्न युगों का इतिहास वर्णित करती हुई कहानियाँ हैं। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानियों में समाज के उपेक्षित एवं निम्न वर्गों के पात्रों का चित्रण मिलता है। जिसके माध्यम से वे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य करते हैं, यह वेदनामिश्रित व्यंग्य परिवेश ~~की सच्चाई~~ को सत्यापित भी करता है।

प्रेमचंदोत्तर युग में सामाजिक यथार्थ चिंतन के अतिरिक्त फ्रायड के चेतन - अवचेतन - अचेतन सिद्धांत का भी प्रभाव स्पष्ट होता हुआ दिखलाई देता है। जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी की कहानियाँ भी इसी धारा के अन्तर्गत आते हैं। इनकी कहानियों में पाश्चात्य दर्शन, पाश्चात्य मनोविज्ञान तथा पाश्चात्य कला — आदि का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। जैनेन्द्र की तीन सौ से ऊपर कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' आठ भाग में संगृहीत हैं। स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर अग्रसर होना, साधारण से हटकर मनोविज्ञान में रुचि, समाज की अपेक्षा व्यक्ति में अधिक रुचि, नारियों की कष्ट सहिष्णुता की प्रशस्ति, सामाजिक यथार्थ की अपेक्षा आदि जैनेन्द्र की कहानियों की विशेषताएं हैं।

[शेष अगले व्याख्यान में]

Scanned with CamScanner